3

उनेसिमुस के लिए पौलुस की अपील

(फिलेमोन 8-20)

कठिन चर्चा के लिए फिलेमोन को तैयार करने के बाद पौलुस अपनी विनती की ओर आ गया। उसके बाद जो कुछ हुआ उसे मसीही विश्वास का "मास्टरपीस" कहा जाता है। दृढ़ता और विनम्रता के मसीह जैसे मेल के साथ पौलुस ने फिलेमोन को वह करने के लिए कहा, जो सही था। यूनानी धर्मशास्त्र में आयतें 8 से 14 एक लम्बा, जटिल वाक्य हैं।

8, 9

[8]इसलिए यद्यपि मुझे मसीह में बड़ा हियाव तो है, कि जो बात ठीक है, उस की आज्ञा तुझे दूं। [9]तौभी मुझ बूढ़े पौलुस को जो अब मसीह यीशु के लिए कैदी हूं, यह और भी भला जान पड़ा कि प्रेम से विनती करूं।

आयत 8. इसलिए (*dio*) सलाम और प्रार्थना की ओर उस बुनियाद के रूप में ध्यान दिलाता है, जिसके आधार पर अगला तर्क दिया जाने वाला था। अभी तक न तो उनेसिमुस का नाम (आयत 10) और न ही पौलुस की विनती के ढंग की बात की गई थी (आयत 17)। **मुझे मसीह में बड़ा हियाव तो है** पौलुस के तर्कों और उसकी अपील के सम्मानजक स्वर की सामर्थ के बीच नाज़ुक संतुलन को दिखाता है। पौलुस के पास प्रेरिताई का अधिकार था, परन्तु वह इस अवसर पर इसे लागू करने से बच रहा था। "बड़ा हियाव" उस वास्तविकता का एक विनम्र संकेत था। **मसीह में** इस पत्र में पाए जाने वाले सभी सम्बन्धों का आधार है। मसीह नई वास्तविकता थी (गलातियों 3:28; 2 कुरिन्थियों 5:17)। संसार में फिलेमोन उपाधि में पौलुस से कहीं ऊंचा खड़ा होगा क्योंकि वह धनवान था और जेल में भी नहीं था। परन्तु मसीह में ऐसे अवसरों से कोई फर्क नहीं पड़ा। पौलुस का ढंग हियाव की कमी से नहीं था, बल्कि यह मसीह यीशु में उसके भरोसे पर था।

आज्ञा तुझे दूं यूनानी क्रिया शब्द *epitassō* का अनुवाद है, जिसका अर्थ है "अधिकार के साथ आज्ञा देना।"[1] इस शब्द का इस्तेमाल यीशु द्वारा किया गया था, जब उसने एक दुष्टात्मा को एक जवान लड़के में से निकल जाने की आज्ञा दी थी (मरकुस 9:25)। चेलों ने इसी शब्द का इस्तेमाल किया था, जब वे ऐसी आत्माओं को निकालने (मरकुस 1:27) और तूफ़ानी समुद्र (लूका 8:25) को शांत करने की प्रभु की योग्यता पर चकित थे। यह ध्यान देने वाली बात है कि पौलुस ने यहां के अलावा अपने किसी पत्र में इस शब्द का इस्तेमाल नहीं किया, जहां उसने

फिलेमोन को कही अपनी बात को आज्ञा मानने से इनकार किया। पौलुस आम तौर पर निर्देश सीधे देता था परन्तु ऐसा लगता है कि इस परिस्थिति में वह सावधानी बरत रहा था कि "दबंग" न समझ लिया जाए। फिलेमोन से ऐसे बात करने के बजाय जैसे माता-पिता बच्चे से करते हैं, बॉस कर्मचारी से करता है या मालिक गुलाम से करता है, पौलुस ने एक भाई के दूसरे भाई को लिखने के ढंग को चुना।

जो बात ठीक है। इस बात की अभिव्यक्ति है कि जो आज इस ताड़ना में मिलती है कि "सही काम करो!" पौलुस फिलेमोन को जो कुछ उनेसिमुस के मामले में किया जाना चाहिए उसे करने का पर्याप्त कारण और प्रेरणा दे रहा था। शेष काम फिलेमोन को स्वयं ही करना था।

आयत 9. तौभी मसीह यीशु के लिए फिलेमोन के व्यवहार के उस पहलू को दिखाता है जिसकी पौलुस ने पहले पुष्टि की (आयतें 5, 7)। मसीही विश्वास का सार और इसका सबसे स्पष्ट करने वाला व्यवहार प्रेम है (मत्ती 22:37-40; यूहन्ना 13:34, 35; 1 कुरिन्थियों 13)। फिलेमोन के लिए पौलुस की अपील का आधार आज्ञा नहीं, बल्कि प्रेम है। मरकुस बार और हेलमट ब्लेंक ने सुझाव दिया है कि आयत 9 का यह आरम्भिक वाक्यांश "पूरे [फिलेमोन] के शीर्षक काम कर सकता है।"[2]

तुझ ... को ... विनती करूं यूनानी क्रिया शब्द *parakaleō* का अनुवाद है। किसी उत्तर या व्यवहार की ओर ध्यान दिलाने पर पौलुस आमतौर पर इसका इस्तेमाल करता था (रोमियों 12:1; 1 कुरिन्थियों 1:10; इफिसियों 4:1; फिलिप्पियों 4:2)। यहां यह "आज्ञा" (आयत 8) से अलग है, जिसे प्रेरित दे नहीं रहा था।

अपील करने का एक दिलचस्प आधार **तौ भी बूढ़े पौलुस को जो कैदी** दिया गया। फिलेमोन से अभी स्पष्ट नहीं की गई थी; पत्र का सबसे अधिक धमाकाखेज़ भाग आगे था। जैसे कठिन बात को कहने से पहले लम्बी सांस लेते हैं, वैसे ही पौलुस ने अपनी बात फिर से की और इसलिए ध्यान अन्तिम सम्भावित पल तक अपनी ओर ही रखा।[3]

अनुवादित शब्द **बूढ़े** (NASB; KJV) या "बज़ुर्ग मनुष्य" (NIV; NRSV) का अनुवाद RSV और NEV में "राजदूत" हुआ है। "राजदूत" की पसन्द का समर्थन करते हुए "भावनात्मक उपदेश" के साथ "बूढ़े" के इस्तेमाल को मिलाया गया।[4] परन्तु चाहे दोनों अनुवाद हो सकते हैं, परन्तु "बूढ़े" को चालाकी के रूप में देखने की आवश्यकता नहीं है। इसके अलावा "राजदूत" फिलेमोन को पौलुस के अपने प्रेरिताई के अधिकार की बात करने से बचने के अनुकूल नहीं लगता। "बूढ़े पौलुस" ने इस बार पचास से अधिक और सम्भवतया साठ से ऊपर के प्रेरित को अपने आपको तरसयोग्य व्यक्ति के रूप में चाहे न हो परन्तु सहानुभूति रखने वाले और जोशीले व्यक्ति के रूप में प्रस्तुत किया। **मसीह यीशु के लिए कैदी** पौलुस का परिचय देने के लिए आयत 1 में इस्तेमाल हुए शब्दावली ही है। इस परिस्थिति में पौलुस को जिस अधिकार में सम्भाला वह मुख्यतया उसके अनुभव, आयु, प्रेम और कष्ट सहने से मिला था। क्या वह इससे अधिक स्पष्ट कर सकता था कि वह अधिकार पर आधारित आज्ञा नहीं दे रहा था, बल्कि प्रेम पर आधारित अपील कर रहा था?

10-14

[10]मैं अपने बच्चे उनेसिमुस के लिए जो मुझ से मेरी कैद में जन्मा है, तुझ से विनती करता हूं। [11]वह तो पहिले तेरे कुछ काम का न था, पर अब तेरे और मेरे दोनों के बड़े काम का है। [12]उसी को अर्थात जो मेरे हृदय का टुकड़ा है, मैंने उसे तेरे पास लौटा दिया है। [13]उसे मैं अपने ही पास रखना चाहता था कि वह तेरी ओर से इस कैद में जो सुसमाचार के कारण है, मेरी सेवा करे। [14]पर मैंने तेरी इच्छा बिना कुछ भी करना न चाहा कि तेरी यह कृपा दबाव से नहीं पर आनन्द से हो।

आयत 10. मैं ... विनती करता हूं आयत 9 के यूनानी क्रिया शब्द *parakaleō* को दोहराता है। **के लिए** यूनानी उपसर्ग *peri* का अनुवाद है, जो इस के कर्म के सम्बन्ध कारक *tou emou teknou* होने पर, जैसा कि यहां है, का अर्थ ''बारे में,'' ''सम्बन्ध में,'' या ''के हवाले से'' होता है। पौलुस फिलेमोन से एक परिस्थिति की अपील कर रहा था, जिसमें उसने विश्वास में उसके बच्चे उनेसिमुस की बात की, जिसका अभी नाम नहीं दिया गया। पौलुस आम तौर पर उनके लिए जो मसीही बन गए थे अपनी सेवकाई के परिणाम के रूप में **अपने बच्चे** कहता था (1 कुरिन्थियों 4:14-17; गलातियों 4:19; 2 तीमुथियुस 1:2)।

यूनानी धर्मशास्त्र में **उनेसिमुस** नाम इस आयत के अन्तिम शब्द तक नहीं मिलता है। अंग्रेज़ी अनुवादों में चाहे इस नाम को आयत के बीच में ''मेरे बच्चे'' के बाद रखा गया है, परन्तु ऐसा किए जाने पर शब्द के क्रम का उठने वाला तनाव खत्म हो जाता है। पौलुस ने इस पत्र का अधिकतर भाग (आयतें 1-10) उनेसिमुस का नाम लेने से पहले लिख दिया था। यह ''इसहाक'' के नाम की तरह ही देरी से बताया गया, जिसे उत्पत्ति 22:2 में नाटकीय ढंग से सिखाया गया। ''उनेसिमुस'' का अर्थ सम्भवतया ''उपयोगी'' है। यह नाम चाहे कई बार स्वतन्त्र लोगों को दिया जाता था परन्तु अधिकतर यह दासों के लिए इस्तेमाल होने वाला उपयुक्त नाम था।

जो मुझ से मेरी कैद में जन्मा है विडम्बना से भरा है। पत्र में पहली बार पौलुस ने अपने कैद में होने की बात की (आयतें 1, 9)। यहां पर इस शब्द का मूल अर्थ किसी को भागने से रोकने के लिए इस्तेमाल होने वाली ''बेड़ियां'' या ''कड़ियां'' है। जेल में (या कम से कम नज़रबन्दी के दौरान, जैसे प्रेरितों 28:30, 31 में) पौलुस किसी बच्चे का आत्मिक पिता बन गया था। जेल परमेश्वर के राज्य को बढ़ने से रोक नहीं पाई। एक बार फिर पौलुस को मसीह का प्रचार करने से रोकने के प्रयासों से वास्तव में ''सुसमाचार ही की बढ़ती हुई'' (फिलिप्पियों 1:12)। इस आयत की शायद सबसे संतुष्ट करने वाली अभिव्यक्ति जे. बी. फिलिप्प के अनुवाद से मिलती है: ''मैं अपने बच्चे के लिए अपील कर रहा हूं। हां, मैं पिता बन गया हूं चाहे मैं ताले और चाबी के अन्दर था, और बच्चे का नाम है **उनेसिमुस!**''

आयत 11. वह तो पहिले तेरे कुछ काम का न था, पर अब ... है उनेसिमुस के नाम के गूढ़ अर्थ के हवाले से शब्दों का खेल था। पौलुस ने कहा कि उनेसिमुस पहले बेकार गुलाम था। परन्तु शायद वह चोरी (आयत 18) अनुपस्थिति, या इन तीनों के कारण। परन्तु चाहे वह बेकार *achrēstos* था परन्तु वह उपयोगी *euchrēstos* बन गया था। **तेरे और मेरे दोनों के** एक

और विनम्रतापूर्वक याद दिलाने वाला है कि पौलुस को उनेसिमुस के साथ बिताए उसके समय से लाभ मिला था। कई टीकाकारों का मानना है कि पौलुस फिलेमोन को उनेसिमुस को स्वतन्त्र करने और उसे रोम में उसके पास लौट आने की अनुमति देने का संकेत दे रहा था। जहां वह कैद में पड़े प्रेरित के लिए अधिक उपयोगी हो सकता था। ऐसा था या नहीं, परन्तु पौलुस ने यह स्पष्ट कर दिया कि उनेसिमुस एक सुधरा हुआ व्यक्ति था और अब वह वैसा बेकार गुलाम नहीं था, जैसा फिलेमोन का घर छोड़ने से पहले था।

आयत 12. मैंने उसे तेरे पास लौटा दिया है की बात भगौड़े दास के विचार का परिचय देती है। आम तौर पर यह माना जाता है कि उनेसिमुस वापस न आने के लिए भाग गया था, जिसकी दासता में वापस आने की कोई योजना नहीं थी। ऐसा होने पर उसने भगौड़ा बन जाना था, जिसे पकड़े जाने का खतरा, अपने स्वामी के पास लौटाए जाने का और कठोर दण्ड दिए जाने का खतरा रहना था।

> भगौड़े दास के विरुद्ध कानून द्वारा कठोर दण्ड दिए जाने की अनुमति थी: उसे उसके स्वामी द्वारा किसी दूसरे को बेचा जा सकता था, शायद और भी कठोर स्वामी को; उसे कोड़े मारे जा सकते थे, गर्म लोहे से जलाया जा सकता था, विकलांग किया जा सकता था या धातु के कॉलर से बांधा जा सकता था, शायद क्रूस पर भी चढ़ाया जा सकता था, पशुओं के आगे फैंका जा सकता था या मार डाला जा सकता था... ।[6]

जेम्स डी. जी. डन ने कम से कम एक सम्भावना की ओर ध्यान दिलाया है कि उनेसिमुस कम से कम भगौड़ा गुलाम नहीं था, बल्कि उसने केवल दास और स्वामी के बीच झगड़े में मध्यस्थता करने के लिए अपने स्वामी के उत्पाद से "मित्रता पूर्वक तीसरे पक्ष" को चाहा था।[7] यदि ऐसा है भी तो उनेसिमुस अभी भी कानूनी तौर पर गुलाम था और उसका फिलेमोन के घर से उनुपस्थित रहना गैर कानूनी था और रोमी कानून के अनुसार उसके लिए अपने स्वामी के पास लौटना आवश्यक था।

इसलिए पौलुस ने उनेसिमुस को फिलेमोन के पास वापस भेज दिया। चाहे भगौड़े गुलाम के साथ व्यवहार करने के लिए पुराने नियम के परामर्श से यह मेल नहीं खाता था (व्यवस्थाविवरण 23:15, 16) पर यह पहली सदी की कलीसियाओं में दासों के सम्बन्ध में पौलुस की शिक्षाओं से मेल खाता था (इफिसियों 6:5-8; कुलुस्सियों 3:22-25)। वापसी का विचार चाहे आरम्भ में पौलुस का था, उनेसिमुस का इसका पक्का पता नहीं है, पर अधिक सम्भावना प्रेरित की ओर से ही है।

चाहे पौलुस को फिलेमोन में पूरा भरोसा था, परन्तु उनेसिमुस का उसके पास लौटाना, पौलुस और उनेसिमुस दोनों के लिए जोखिम का काम था।

> जब कोई दास भागने के दौरान दुख सहने के कारण या इनाम पाने के लिए निजी लोगों द्वारा या सिपाहियों द्वारा उसे बलपूर्वक लाया जाने पर, *उसका भविष्य पूरी तरह से स्वामी पर निर्भर होता था।* दास को चाबुक मारे जा सकते थे या हड्डी पसली टूटने तक उसकी पिटाई की जा सकती थी; उसके माथे या भुजाओं पर कुछ लिखा जा सकता था; उसके

पांवों के नीचे की त्वचा को जलते लोहे से जलाया जा सकता था। उसके नाम और पता लिखी धातु की पट्टी उसके गले में बांधी जा सकती थी; साथी दासों को चेतावनी देने के लिए उसकी हत्या भी की जा सकती थी।[8]

सम्भावनाओं को जानते हुए पौलुस को लगा कि जैसे वह अपने हृदय का टुकड़ा भेज रहा है। फिर से आयत 7 की तरह पौलुस ने "हृदय" के लिए वही भलाई वाला शब्द इस्तेमाल किया जिसका अर्थ "भीतरी अंग" था। उससे उम्मीद थी कि फिलेमोन जिसने पवित्र लोगों के मनों को हरे-भरे किया था, पौलुस के "हृदय के टुकड़े" (उनेसिमुस) अपने स्वामी के पास लौटने पर नरमी से व्यवहार करेगा।

आयत 13. उसे मैं अपने ही पास रखना चाहता था, से उनेसिमुस को रोम में अपने पास रखने की पौलुस की व्यक्तिगत इच्छा बताई गई। "मैं चाहता था" (*eboulomēn*) अपूर्णकाल में है, जो अनुवाद को "मैं चाह रहा था" होने की अनुमति देता है। यह इस बात का संकेत है कि उनेसिमुस को भेजने का निर्णय पौलुस के लिए न तो जल्दबाजी में था और न आसानी में। "मैं" जो कि ज़ोर देने वाला शब्द है, फिर से उनेसिमुस के ऊपर ज़ोर न देते हुए पौलुस पर ज़ोर देता है।

कि तेरी ओर से ... मेरी सेवा करे, बहुत कुछ फिलिप्पियों की कलीसिया की ओर से इपफ्रोदितुस द्वारा उसकी की गई सेवा के बारे में फिलिप्पियों को पौलुस के लिखने जैसा ही है (फिलिप्पियों 2:25-30)। पौलुस ने उसके लिए की गई उनेसिमुस की भलाई का श्रेय फिलेमोन के खाते में डाल दिया, चाहे फिलेमोन ने अपने दास के लिए इस प्रकार से सेवा करना नहीं चाहा था। **इस कैद में जो सुसमाचार के कारण है,** मूलतया "सुसमाचार की ज़ंजीरों में है" यहां पहली तेरह आयतों में चौथी बार (1, 9, 10, 13) इस तथ्य का हवाला है कि पौलुस जेल से लिख रहा था। आयत 13 के संदर्भ में जेल की बात फिलेमोन को याद दिलाने के लिए थी कि कैदी प्रेरित को धनवान और अधिक सुखी दास के स्वामी से बढ़कर उनेसिमुस की सेवाओं की आवश्यकता थी।

आयत 14. पौलुस ने वही विचार फिर से दोहराया, जो आयतें 8 और 9 में उसने पहले बताया था। उसने कहा कि वह चाहता था कि उनेसिमुस रोम में उसके साथ रहे और फिलेमोन को बताया, **"पर मैंने तेरी इच्छा बिना कुछ भी करना न चाहा"** अपूर्णकाल की निरन्तर क्रिया के विपरीत ("मैं चाहता था" या "मैं चाह रहा था"; आयत 13)। "चाहा" (*ēthelēsa*) निर्णायक अनिश्चित भूतकाल में बताया गया है। पौलुस उनेसिमुस के लिए जो उसका मन चाहता था उसके और जो इस परिस्थिति में उसे मालूम था कि उसे करना चाहिए के बीच फंस गया था। अन्त में अच्छे निर्णय, जो उसने लिया था, की जीत हुई और उनेसिमुस को कुलुस्से में वापस भेज दिया गया।

उनेसिमुस को अपने साथ रखकर फिलेमोन को यह समझाने के लिए कि वह क्या कर रहा है तुखिकुस के हाथ पत्र भेजना पौलुस के लिए एक और विकल्प था। परिणाम इसका भी वही हो सकता था। दोनों तरीकों से फिलेमोन उनेसिमुस को रोम में पौलुस की सेवा करने की अनुमति दे सकता था। परन्तु पौलुस ने इस ढंग को नहीं चुना। उसने फिलेमोन को बताया कि उसका यह निर्णय इसलिए लिया गया कि **तेरी यह कृपा दबाव से नहीं पर आनन्द से हो।** इस कथन से पूरे

पत्र का सार मिल जाता है। पौलुस बहुत आगे निकल गया और बहुत व्यक्तिगत कष्ट के द्वारा न केवल अच्छी *मंज़िल* पाने के लिए , बल्कि उस मंज़िल तक पहुंचने के लिए *अच्छे* साधनों का इस्तेमाल करने के लिए किया। पौलुस आदेश देकर (आयत 8) विवश कर सकता था (आयत 14) परन्तु उसने इसके बजाय ''विनती'' करके (आयत 9) पूछना चुना। पौलुस ने कुरिन्थियों की कलीसिया के नाम लिखते समय इसी प्रकार से ''दबाव'' के लिए उसी शब्द का इस्तेमाल किया ''हर एक जन जैसा मन में ठाने वैसा ही दान करे; न कुढ़-कुढ़ के, और न दबाव से, क्योंकि परमेश्वर हर्ष से देनेवाले से प्रेम रखता है'' (2 कुरिन्थियों 9:7)।

15-17

[15]क्योंकि क्या जानें वह तुझ से कुछ दिन तक के लिए इसी कारण अलग हुआ कि सदैव तेरे निकट रहे। [16]परन्तु अब से दास की नाईं नहीं, बरन दास से भी उत्तम, अर्थात भाई के समान रहे जो शरीर में भी और विशेष कर प्रभु में भी मेरा प्रिय हो।

[17]सो यदि तू मुझे अपना सहभागी समझता है, तो उसे इस प्रकार ग्रहण कर जैसे मुझे।

आयत 15. क्योंकि फिलेमोन और उसके भगौड़े दास की पूरी कहानी की सम्भावित आत्मिक समझ का परिचय देने का विनम्र ढंग था। ''क्योंकि'' यूनानी क्रिया विशेषण *tacha* का अनुवाद है जो ''अनुमान और पूरी सम्भावना के बीच की *शायद,* सम्भव है, सम्भवतया श्रेणी की सम्भावना को दिखाता चिह्न'' है।[1] पौलुस के कहने का अर्थ ''शायद'' था या और विश्वास से ''सम्भवतया,'' वह अगली व्याख्या को निश्चितता के रूप में नहीं, बल्कि सम्भावना के रूप में दिखा रहा था।

उसने फिलेमोन को बताया, **क्या जानें वह तुझ से कुछ दिन तक के लिए इसी कारण अलग हुआ।** यह भगौड़े दास की बात करने का नाज़ुक और दोषी न ठहराने वाला ढंग था। जो कुछ उनेसिमुस ने किया था, वह गलत था और उसके व्यवहार के कारण उसके मालिक को नुकसान हुआ था (आयत 18)। परन्तु पौलुस का मानना था कि मालिक/गुलाम के झगड़े से काई बड़ी बात हो रही है। इसके बड़े उद्देश्य को पूरा करने लिए परमेश्वर का उपाय करने वाला हाथ काम कर रहा था।

कुछ दिन तक मूलतया ''एक घण्टे के लिए'' है (2 कुरिन्थियों 7:8; देखें गलातियों 2:5) और समय की उस अवधि को कम करके बता रहा लगता है जिसमें उनेसिमुस अपने कर्त्तव्यों से भाग गया था। पौलुस मसीही लोगों को जीवन की ''बड़ी तस्वीर'' को देखने के लिए कहता है (रोमियों 8:18; 2 कुरिन्थियों 4:17)। बड़े दृष्टिकोण से हर किसी को अपनी वर्तमान परिस्थिति कहीं अधिक अच्छी तरह से दिखाई देती है (रोमियों 8:28-39)।

कि सदैव तेरे निकट रहे; आधुनिक पाठक को परेशानी में डाल देता है कि पौलुस शारीरिक रूप में कह रहा था या आत्मिक। क्या उसके कहने का अर्थ था कि उनेसिमुस अब मसीही बन गया था (आयत 16), इस कारण उसने और फिलेमोन ने सदा के लिए अब मसीह में भाई बने रहना था? क्या वह यह कह रहा था कि मसीह में फिलेमोन को जो किसी समय ''बेकार'' दास था, अब उसे बहुतों के लिए ''उपयोगी'' बना दिया था (आयत 11) जिसने

अब भागना नहीं था, बल्कि अपने जीवन के अन्त तक वफ़ादारी से सेवा करनी थी? इन दोनों विकल्पों में से किसी को पसन्द करने की हमें कोई मज़बूरी नहीं है। आशा जानबूझकर अस्पष्ट रखी गई हो सकती है, या फिर फिलेमोन को अपना स्वयं का निर्णय लेने में अनुमति देने के लिए।

आयत 15 में पौलुस के तर्क से याकूब के पुत्र यूसुफ से कहे प्रसिद्ध शब्द ध्यान में आते हैं। अपने पिता की मृत्यु के बाद उसने अपने भाइयों के साथ दासता वाले अपने अनुभव की बात की। उसने कहा, "यद्यपि तुम लोगों ने मेरे लिए बुराई का विचार किया था; परन्तु परमेश्वर ने उसी बात में भलाई का विचार किया, जिस से वह ऐसा करे, जैसा आज के दिन प्रकट है, कि बहुत से लोगों के प्राण बचे हैं" (उत्पत्ति 50:20)। फिलेमोन पर अपने टीका में येरोम (ईस्वी 345–420) ने ऐसे ही लिखा है:

> कई बार बुराई का अवसर भलाई का अवसर बन जाता है, और परमेश्वर दुष्ट मानवीय योजनाओं को सही अंत में बदल देता है। ... यदि वास्तव में [उनेसिमुस] अपने स्वामी से न भागता, तो उसने रोम में कभी नहीं आना था, जहां पौलुस जेल में ज़ंजीरों में था। यदि वह पौलुस को ज़ंजीरों में न देखता तो उसने मसीह में विश्वास नहीं लाना था। यदि वह मसीह में विश्वास न लाता तो उसने पौलुस का बच्चा कभी नहीं बनना था, कि वह उसे सुसमाचार के कार्य के लिए भेज सके। ...[10]

आयत 16. आयत 15 में आरम्भ हुआ वाक्य जारी रहता है: उनेसिमुस "सदा के लिए" फिलेमोन के पास लौट आया था, परन्तु **अब से दास की नाईं नहीं।** पत्र में "दास" शब्द यहां पहली बार आया है। दासतामुक्ति (दास को दी जाने वाली स्वतन्त्रता की औपचारिक प्रक्रिया) बेशक उनेसिमुस के लिए पौलुस की इच्छा होगी, परन्तु यह आयत यह संकेत नहीं देती है कि वह फिलेमोन को अपने दास को छोड़ देने का निर्देश दे रहा हो। इसके बजाय यह बदले हुए सम्बन्ध के लिए पुकार थी, जिससे उसने उनेसिमुस को **दास से भी उत्तम** मानना था। पौलुस दासता के मुद्दे पर बहस नहीं कर रहा था, बल्कि वह इसे आगे ले जा रहा था।

उनेसिमुस को दास से कहीं अधिक के रूप में देखा जाना आवश्यक था। मसीह में वह **प्रिय भाई** बन गया था, जिसमें "भाई" वही शब्द था, जिसे परिचय में तीमुथियुस के लिए इस्तेमाल किया गया और "प्रिय" शब्द वह था, जिसे फिलेमोन के वर्णन के लिए इस्तेमाल किया गया था (आयत 1)। पौलुस ने पहले गलातियों को लिखा था:

> क्योंकि तुम सब उस विश्वास करने के द्वारा जो मसीह यीशु पर है, परमेश्वर की सन्तान हो, और तुम में से जितनों ने मसीह में बपतिस्मा लिया है, उन्होंने मसीह को पहिन लिया है (गलातियों 3:26, 27)।

जिस प्रकार से मसीही बनने पर लिंग और जाति नहीं बदलते, वैसे ही दासता सहित सामाजिक और आर्थिक परिस्थितियां भी बदल नहीं जातीं। इसके बजाय मसीह में एक नया रुतबा मिलता है, जो सब मानवीय श्रेणियों से बढ़कर है।

बार-बार पौलुस ने उनेसिमुस के लिए अपने गहरे लगाव को स्पष्ट किया और ऐसा उसने फिर किया, जब उसने लिखा कि उनेसिमुस उसका प्रिय भाई है **विशेष कर मेरा।** फिलेमोन को

पौलुस के यह कहने की उम्मीद हो सकती है कि उसे अंदाजा नहीं था कि पौलुस यह जोड़ देगा, **जो शरीर में भी और विशेष कर प्रभु में।** दास और उसके स्वामी का दोहरा रिश्ता हो गया था। शरीर में वे कानूनी, आर्थिक और सामाजिक रूप में बंधे हुए थे। प्रभु में वे यीशु के लहू और पवित्र आत्मा के द्वारा इकट्ठे बंधे हुए थे, जो उन दोनों में वास करता था। कुरिन्थियों की कलीसिया के नाम पौलुस के पहले कहे गए शब्द इसी परिस्थिति की बात करते थे:

> सो अब से हम किसी को शरीर के अनुसार न समझेंगे, और यद्यपि हम ने मसीह को भी शरीर के अनुसार जाना था, तौभी अब से उस को ऐसा नहीं जानेंगे। सो यदि कोई मसीह में है तो वह नई सृष्टि है: पुरानी बातें बीत गई हैं; देखो, वे सब नई हो गईं हैं (2 कुरिन्थियों 5:16, 17)।

आयत 17. सो यदि तू मुझे सहभागी समझता है का मूलतया अर्थ है फिर यदि तू मुझे सहभागी बनाए। ''सहभागी'' यूनानी संज्ञा शब्द *koinōnos* का इस्तेमाल है, जिसका आम तौर पर इस्तेमाल व्यापारिक पाटनरशिप के लिए किया जाता था (लूका 5:10)। यह उसी यूनानी संज्ञा शब्द *koinōnia* से लिया गया है, जिसका इस्तेमाल आयत 6 में हुआ है। आयत 1 में पौलुस ने पहले ही फिलेमोन को अपना ''सहकर्मी'' कहकर बुलाया था। इस वाक्यांश का अर्थ जो इतना कठिन नहीं है, यह है कि ''मैं जानता हूं कि तू मुझे साझेदार मानता है'' (फिलिप्पियों 2:1 में ऐसी ही संरचना को देखें।)

उसे इस प्रकार ग्रहण कर जैसे मुझे। इस पत्र में मिलने वाला अवश्य माननीय पहला वाक्य है। पौलुस फिलेमोन को इस प्रकार से उत्तर देने के लिए ''आज्ञा'' न देने के प्रति चौकस था (आयत 8)। यहां पर भी उसने अवश्य माननीय बात शर्त सहित वाक्य में रखी। ''ग्रहण कर'' पौलुस के लिए वज़नदार शब्द था। यूनानी क्रिया शब्द *proslambanō* के एक रूप, इस शब्द का इस्तेमाल परमेश्वर के लोगों को ग्रहण करने के ढंग के लिए (रोमियों 14:3; 15:7) और अनुसरण किए जाने के ढंग में किया जाता था कि मसीही लोग एक-दूसरे को कैसे ग्रहण करें (रोमियों 14:1; 15:7)।

उनेसिमुस के लिए पौलुस की अपील मत्ती 25 अध्याय में भूखों, प्यासों, परदेशियों, नंगे, बीमार और कैदियों के लिए की गई यीशु की विनती जैसी ही है। यीशु ने कहा कि वह न्याय के दिन घोषणा करेगा, ''तुम ने जो मेरे इन छोटे से छोटे भाइयों में से किसी एक के साथ किया, वह मेरे ही साथ किया'' (मत्ती 25:40)। यदि फिलेमोन को उनेसिमुस में भलाई नहीं दिखाई देती थी तो उसे यह मान लेना था कि वह पौलुस के साथ ऐसा ही कर रहा है।

18-20

[18]और यदि उस ने तेरी कुछ हानि की है, या उस पर तेरा कुछ आता है, तो मेरे नाम पर लिख ले। [19]मैं पौलुस अपने हाथ से लिखता हूं, कि मैं आप भर दूंगा; और इस के कहने की कुछ आवश्यकता नहीं, कि मेरा कर्ज जो तुझ पर है वह तू ही है। [20]हे भाई यह आनन्द मुझे प्रभु में तेरी ओर से मिले: मसीह में मेरे जी को हरा भरा कर दे।

आयत 18. यहां तक पौलुस ने आत्मिक भाष और आत्मिक तर्कों का इस्तेमाल किया था। आयत 18 में हम वाणिज्य चिंताओं वाले संसार की ओर देखते हैं। **और यदि उस** *[ei de ti]* **ने तेरी कुछ हानि की है,** के लिए आवश्यक नहीं था कि पौलुस और फिलेमोन इस पर सहमत हों कि उनेसिमुस ने क्या किया है।[11] इससे केवल इतना स्पष्ट हुआ कि उनेसिमुस की कोई भी गलती उसके या उसकी आशाओं के बारे में पौलुस की पहले रही किसी बात को कि फिलेमोन उसके साथ नरमी से पेश आए नकारती नहीं थी।

उनेसिमुस ने यदि अपने स्वामी के संसाधनों का दुरुपयोग किया, रोम जाने के लिए उसके पैसे चुराए या फिलेमोन को विस्तृत समय के लिए अपनी सेवाएं नहीं दी? "हानि की" यूनानी भषा के शब्द *adikeō* से लिया गया है जिसका इस्तेमाल पौलुस ने दासों और स्वामियों के विषय में लिखते हुए कुलुस्सियों की पत्री में किया है "जो *बुरा करता है,* वह अपनी बुराई का फल पाएगा; वहां किसी का पक्षपात नहीं" (कुलुस्सियों 3:25)। यह हो सकता है कि पौलुस ने कुलुस्सियों में यह टिप्पणी विशेषकर उनेसिमुस और फिलेमोन को ध्यान में रखकर की हो।

वाणिज्य की तकनीकी भाषा का इस्तेमाल जारी रखते हुए, पौलुस ने कहा, **तेरा कुछ आता है** (देखें मत्ती 18:28, 30), विश्वास में उनेसिमुस का पिता फिलेमोन के उसके सारे कर्ज़ों और दायित्वों की जिम्मेदारी ले रहा था, यह कहकर कि **मेरे नाम पर लिख ले।** पौलुस फिर से फिलेमोन और उनेसिमुस के बीच अपने आपको रख रहा था। दास के लिए कर्ज़ चुकाने का कोई तरीका नहीं था तो पौलुस ने इसे अपने ऊपर ले लिया। (इस भाव में क्रूस की कहानी सुनाई देती है; देखें रोमियों 5:6–10; 8:1–4.) एक और वाणिज्य शब्द यूनानी क्रिया शब्द *ellogeō* का इस्तेमाल इस वाक्य में "आर्थिक दायित्व के साथ अधिकार देना" है।[12] नये नियम में यह शब्द केवल यहां और रोमियों 5:13 में मिलता है, जहां इसका अनुवाद "गिना" हुआ है।

आयत 19. मैं पौलुस अपने हाथ से लिखता हूं, कि मैं आप भर दूंगा शब्दों के साथ प्रेरित ने अपनी पत्री को कानूनी प्रतिज्ञा-पत्र में बदल दिया। पौलुस के लिए दस्तावेज़ों की प्रामाणिकता के साधन के रूप में अपने पत्रों की समाप्ति हाथ से लेकर करना विशेष बात थी (कुलुस्सियों 4:18; गलातियों 6:11; 1 कुरिन्थियों 16:21)। चाहे यहां पर अपने हाथ से लेकर उसने किसी भी कर्ज़ या दण्ड को चुकाने की गारंटी दी, जो उनेसिमुस ने फिलेमोन का देना था। आयत 18 और 19 की शब्दावली से मेल खाते हुए पौलुस ने एक और तकनीकी आर्थिक शब्द यूनानी क्रिया शब्द *apotinō* का इस्तेमाल किया। यह शब्द जिसका अर्थ "क्षतिपूर्ति" करना, *हानि की अदायगी करना* है।[13] नये नियम में यहां केवल एक बार,लेकिन आर्थिक मामलों में व्यवहार वाले प्राचीन कानूनी दस्तावेज़ों में परखा जाता है।

फिर पौलुस वित्त की भाषा से विश्वास की भाषा में चला गया। इस बहुत ही नाज़ुक ढंग से संतुलित पत्र के बड़े भारी तर्क में शायद पौलुस ने फिलेमोन को याद दिलाया, **मेरा कर्ज जो तुझ पर है वह तू ही है।** फिलेमोन पौलुस की सेवकाई के प्रभाव के द्वारा मसीही बना था, जिस कारण फिलेमोन किसी भी मौद्रिक कर्ज़ से जिसका उनेसिमुस उसका देनदार था, बढ़कर पौलुस का आत्मिक कर्ज़दार था।

आयत 20. अपनी अपील के अन्तिम भाग में पौलुस ने अपनी आरम्भिक प्रार्थनाओं और धन्यवाद में से कई मुख्य शब्द और विचारों को बताया (आयत 7)। **हे भाई** पारिवारिक सम्बन्ध

की एक पुष्टि थी, जो फिलेमोन (आयत 7) और उनेसिमुस (आयत 16) दोनों का पौलुस के साथ सम्बन्ध था। पौलुस ने नरमी के आश्वासन के करुणामय शब्द के साथ मज़बूत तर्क देते हुए इस पत्र में संतुलन की भावना बनाए रखी। जो भी दबाव पौलुस ने फिलेमोन पर डाला हो, पर वह चाहता था कि फिलेमोन को पता चल जाए कि पौलुस उसे प्रिय भाई और सहकर्मी के रूप में उसका आदर करता है (आयतें 1, 20)।

यह आनन्द मुझे प्रभु में तेरी ओर से मिले दास के नाम वाले शब्दों का एक और खेल है। ''उनेसिमुस'' का क्रिया रूप (*oninēmi*) नये नियम में केवल यहीं मिलता है। ''उनेसिमुस'' का अर्थ है ''उपयोगी'' या ''लाभदायक।'' यहां पर पौलुस ने स्थिति को पूरी तरह से बदल दिया। वह दास से नहीं, बल्कि स्वामी से प्रभु में उसके लिए ''उपयोगी'' या ''लाभदायक'' होने को कह रहा था।

फिलेमोन के विषय में पौलुस का पहला दावा **मेरे जी को हरा-भरा कर** विनती में सुनाई देता है। आयत 7 में उसने कहा, ''हे भाई [*adelphē*] ... तेरे द्वारा पवित्र लोगों के मन [*splagchna*] हरे भरे [*anapauō*] हो गए हैं।'' आयत 20 में उसने अपने भाई (*adelphē*) से अपने मन (*splagchna*) को हरा-भरा (*anapauō*) करने कहा कहा। संक्षेप में वह फिलेमोन से अपने नाम के अनुसार काम करने को कह रहा था, जो ऐसा अलंकारिक यन्त्र है, जिसे कुरिन्थुस के मसीही लोगों में पौलुस ने भी इस्तेमाल किया था (2 कुरिन्थियों 9:1-5)। फिलेमोन ने पवित्र लोगों के मनों को ताज़ा किया था। पौलुस केवल यही बात उनेसिमुस की स्थिति में करने को कह रहा था।

अपील **मसीह में** शब्दों के साथ समाप्त होती है, जो आयत में पहले ''प्रभु में'' से नज़दीकी से जुड़ा हुआ विचार है। पौलुस के पूरे तर्क को शक्ति इस बात की समझ से मिली थी कि मसीही लोग, जीवन में जिस भी स्थिति में हों, एक ही स्वामी के सेवक हैं (कुलुस्सियों 3:22—4:1)।

प्रासंगिकता

समस्या को स्पष्ट रूप से कहना (आयत 10)

बहुत साल पहले मैंने किसी मित्र के जनाज़े पर वचन सुनाया था, जिसकी मृत्यु AIDS से हुई थी। सच तो यह है कि मैं उसके दोनों जनाज़ों पर बोला था। पहला उस नगर में था, जहां मैं रहता हूं और दूसरा कई मील दूर उसके छोटे से देहाती नगर में था। उसका जीवन कुछ समय से परमेश्वर के विद्रोह में रहा और वह समलैंगिक जीवन शैली के द्वारा HIV की चपेट में आ गया। मैं धन्यवाद करता हूं कि उड़ाऊ पुत्र की तरह वह ''अपने आपे में आया।'' वह परमेश्वर की ओर लौट आया और विश्वासी मसीही के रूप में उसने अपने जीवन के अन्तिम वर्ष बिताए।

पहले जनाज़े पर मौजूद हर किसी को पाप और पश्चाताप की उसकी कहानी मालूम थी। हम ने AIDS की त्रासदी और क्षमा की परमेश्वर की सुन्दरता पर खुलकर बातें कीं, परन्तु जब हम उसके गृहनगर की ओर कई घण्टों के सफ़र पर चल पड़े तो शीघ्र ही स्पष्ट हो गया कि AIDS की किसी ने कोई बात नहीं की। यह घना, त्रासद और अनकहा रहस्य था जिसका हर किसी को पता था।

जनाजे का संदेश देते हुए मैं सभागार में बढ़ते तनाव को महसूस कर सकता था। कुछ था जो कहे जाने के लिए पुकार रहा था, परन्तु लगा कि हर कोई इसे सुनने से डर रहा है। अन्त में जनाज़े के संदेश में एक प्वायंट पर मैंने AIDS के बारे में बात की। मुझे लगा जैसे मुझे शीशे की खिड़की में हथौड़े से मारा गया है। कुछ बिखर गया था। कुछ स्त्रियां विलाप करने लगीं। कठिन सच्चाई बोले जाने तक तनाव बढ़ गया था और फिर वास्तविक शोक और चंगाई आरम्भ हो सकी।

उस दिन जनाज़े का माहौल कुलुस्से की कलीसिया में फिलेमोन के नाम पत्र पढ़े जाने वाले दिन जैसा ही होगा। उनेसिमुस तुखिकुस के साथ वापस आया था। हर किसी को मालूम था कि फिलेमोन और उसके भागौड़े दास के बीच गम्भीर समस्या है। यह क्या सोच रहे थे? क्या होने वाला है? पौलुस परिस्थिति पर क्या सोच रहा था? पत्र के पढ़े जाने से तनाव बन गया था।

अन्त में खामोशी तब टूटी जब उनेसिमुस का नाम लिया गया (आयत 10)। मुझे लगता है कि ऐसा लगा होगा, जैसे किसी ने पत्थर के फर्श पर मिट्टी का घड़ा फोड़ दिया हो। कोई थक के रह गया होगा, कितनों की चीखें निकली होंगी। तौभी बेहतरीन भाग खत्म हो गया था। ''खतरनाक रहस्य'' बता दिया गया था और फिर चंगाई आरम्भ हो सकती थी।

आपकी अपनी स्वतन्त्र इच्छा से (आयत 14)

आगे की कहानी वास्तविक विवरण है या आधुनिक समय का दृष्टांत, मुझे नहीं मालूम। मैंने कई प्रवचनों में कई बार इसके अंश सुने हैं। कहानी एक स्त्री की है, जिसे किसी से प्रेम हो गया और उसने ''सदा प्रसन्नता से'' रहने की आशा से विवाह कर लिया। परन्तु दम्पत्ति के अपने हनीमून से लौटने के थोड़ी देर बाद ही नाश्ते में पति ने अपनी दुल्हन को एक लिस्ट पकड़ा दी। जब उसने पढ़ा तो यह सोचकर कि यह बेतुका जोक है कि वह हंस पड़ी, परन्तु जल्द ही उसने देखा कि उसका पति हस नहीं रहा है और उसके लिए यह एक गम्भीर मसाला था।

लिस्ट को दोबारा देखते हुए वह उसे पढ़ने लगी। उसके पति ने विस्तार से लिखा था कि वह कैसे चाहता है कि वह सब कुछ करे; इसमें वह भी बताया गया था कि वह खाना क्या चाहता है, किस समय उसको खाना दिया जाए, उसके कपड़ों की देखभाल कैसे की जाए, उसकी पत्नी के दूसरे कर्त्तव्यों का लगभग हर दूसरा कल्पना किया जा सकने वाला विवरण। उसने नीरस, कठोर, रौब जमाने वाले, बेदर्द और कड़े पति के रूप में अपने आपको साबित कर दिया था। पत्नी का दिल टूट गया, परन्तु वह उन वचनों को पूरा करने के लिए समर्पित थी, जो उसने दिए थे। वह साल दर साल उस लिस्ट के अनुसार करते हुए बिताती रही।

कुछ समय के बाद वह आदमी मर गया। कुछ साल बाद उसने एक युवक से विवाह कर लिया। यह आदमी विनम्र, दयालु और बर्दाश्त करने वाला था। वह हमेशा वही चाहता जो उसकी पत्नी के लिए बेहतर होता। उसकी नज़रों में पत्नी के लिए सम्मान था और वह उसकी बाहों में सुरक्षित महसूस करती और सचमुच में प्रेम किए जाने को।

उनकी शादी के कुछ साल बीत जाने के बाद वह स्त्री एक दिन कुछ देख रही थी, जो उसने जमा किया था। कुछ पुराने डिब्बों में से देखते हुए उसके हाथ कुछ चीज़ लगी, जिससे उसकी सांस रुक गई। वह चीज़ एक लिस्ट थी! उसने इसे सालों से देखा नहीं था। केवल अपने हाथ में आने पर ही उसको वह सारी पीड़ा याद आ गई जो उसने उस लिस्ट के साथ पहले झेली

थी और वह चिल्लाने लगी।

कुछ समय तक वह अपने आंसू रुकने की प्रतीक्षा करते हुए अपनी पीड़ादायक यादों से अपने पति को परेशान न करने की इच्छा से, काफ़ी देर तक वहां बैठी रही। उस लिस्ट को ध्यान से देखते हुए उसने पाया कि वह अपने नये पति के लिए उस लिस्ट की हर बात वह कर रही थी और उसे अच्छा लग रहा था! दोनों में अन्तर क्या था? वह यह एहसास करके कि थका देने वाला काम कभी भी उसके लिए वास्तव में समस्या नहीं रहा, खूब रोई। उसे अपने नए पति की सेवा करना अच्छा लगता था और यह काम वह *बिना लिस्ट के* करती थी। कुछ करने के लिए बाध्य होने और कुछ करने के लिए स्वतन्त्र होने में अन्तर वही है, जो दासता और प्रेम में अन्तर है।

शायद इस कारण से (आयत 15)

अब तक की सबसे बड़ी मनोवैज्ञानिक मेरी मां है। जब मेरे तीन भाई और मैं इकट्ठे होते तो हम इस बात पर चकित होते हैं कि उसने हमारी सोच को कैसे डाला। हमें दिए उसके सबसे बड़े उपहारों में से एक हर कठिन परिस्थिति में आशीष को देखने की आदत है।

मुझे बचपन में अपने नाना-नानी से मिलने जाने की बातें बिल्कुल साफ याद हैं। वे हमारे जीवनों में बड़े खास लोग होते थे और उनके घर से निकलने पर हमारे मन बड़े दुःखी होते थे। जब तक वे हमें दिखाई देते थे तब तक हमारी आंखों से आसूं छलकना बंद नहीं होते थे। फिर मां हमेशा एक ही बात कहती: "और कोई तरीका भी नहीं है! जाने पर अगर तुम्हें दुःख न हो तो क्या यह बहुत बुरी बात नहीं होगी? इसका अर्थ यह होगा कि जिन लोगों को तुम छोड़कर जा रहे हो वे बहुत ही अच्छे लोग नहीं हैं।" हमारे दिल से दिमाग तक जाने में चाहे समय लगता है, पर हमें मालूम होता था कि मां सही है।

फिलेमोन 15 में पौलुस का संदेश ऐसा ही है। उसने दिखाया कि परेशानी के बादल के पीछे जिसमें उनेसिमुस था "चमकदार रेखा" की सम्भावना थी। यदि वह भागा न होता तो उसने कभी मसीही नहीं बनना था। वह दास से कहीं अधिक बनकर लौट रहा था; वह मसीही भाई के रूप में वापस आ रहा था। पौलुस जैसे कह रहा हो, "फिलेमोन, और किसी तरह से तू ऐसा नहीं चाहता!"

दास से बढ़कर (आयत 16)

विलियम विलबर फोर्स (1759-1833) ने बरतानवी साम्राज्य में गुलामों की खरीद-फरोख्त को खत्म करने के काम में अपना जीवन लगा दिया। इक्कीस वर्ष की आयु में अपना राजनैतिक कैरियर आरम्भ करके उसने लगभग कुछ न करते हुए संसद में अपने पहले कुछ वर्ष बिताए। परन्तु 1787 तक वह बदल गया। अक्तूबर 28, 1787 को अपनी पत्रिका में उसने लिखा, "सर्वशक्तिमान परमेश्वर ने मेरे सामने दो बड़े काम रखे हैं, गुलामों की खरीद-फरोख्त को समाप्त करना और रिवाज़ों [नैतिकताओं] में सुधार करना।" इन दो बड़े कारणों के लिए उसने अपना बाकी जीवन दे दिया।

गुलामों की खरीद-फरोख्त को खत्म करने की अपनी इच्छा को पूरा करने के लिए विलबर ने कई नीतिगत संधियां की। इनमें से एक प्रसिद्ध कुम्हार जोशिया वेज़बुड के साथ थीं। उसने

उसे बातचीत आरम्भ करने के लिए इस्तेमाल करने के लिए एक विशेष पदक बनाने के लिए मना लिया। इस थाली के बीच में एक अफ्रीकी गुलाम को बेड़ियों में बंधे हुए और झुककर विनती करते हुए दिखाया गया था। गुलाम के नीचे यह शब्द लिखे हुए थे: ''क्या मैं मनुष्य और भाई नहीं हूं?''

विलबर फोर्स को समझ आया कि गुलामी का समर्थन तभी कमज़ोर होने लगेगा जब लोग गुलामों को सम्पत्ति के रूप में देखना बन्द करके उन्हें मानवीय जीवों और मानवीय परिवार के सदस्यों के रूप में देखने लगेंगे। प्रेरित पौलुस ने भी यही किया। उनेसिमुस को अपने स्वामी फिलेमोन के पास वापस भेजते हुए उसने उसे एक पत्र देकर भेजा। उस पत्र में पौलुस ने लिखा कि वह उसे उसके पास ''अब उसे दास की नाई नहीं वरन दास से भी उत्तम अर्थात प्रिय भाई के समान'' भेज रहा था (आयत 16)। फिलेमोन के उनेसिमुस को मसीही परिवार के सदस्य के रूप में देखना आरम्भ करते ही पौलुस की चिंता खत्म हो जानी थी।

फिलेमोन ने पौलुस की चुनौती की क्या प्रतिक्रिया दी? हम नहीं जानते। फिलेमोन के नाम पत्र आज हमारे पास है और उसे नये नियम में जगह दी गई है, इसका अर्थ यह है कि इसकी अच्छी सम्भावना है कि दास के स्वामी ने पौलुस की उम्मीद के अनुसार ही उत्तर दिया।

विलबर फोर्स का जीवन भर का अभियान सफलता में पूरा हुआ। गुलामों की खरीद-फरोख्त को खत्म करने के लिए उसके द्वारा शुरुआत करने के छियालीस साल बाद 26 जुलाई 1833 के दिन ब्रिटिश हाउस ऑफ़ कॉमन्ज़ ने पूरे बरतानवी साम्राज्य में गुलामी को खत्म करने के लिए मत दिया। विलबर्स फोर्स तीन दिन बाद मर गया, यह जानते हुए कि गुलाम अन्त में ''मनुष्यों'' और ''भाइयों'' के रूप में देखे जाने लगे हैं।

''उसे इस प्रकार ग्रहण कर जैसे मुझे'' (आयत 17)

एक रूसी लेखक लियो टॉलस्टाय जो 1819 से 1910 तक रहा, ''जहां प्रेम है वहां परमेश्वर है'' शीर्षक से एक लघु कहानी लिखी। इसमें उसने मार्टिन अवडेक नामक एक गरीब मोची के बारे में बताया, जो छोटे से भूमितल वाले कमरे में रहता और काम करता था। भूमितल में एक खिड़की ऊंचाई पर थी जिससे मार्टिन लोगों के गली में से जाते हुए केवल पैरों को देख सकता था।

एक रात नींद में मार्टिन को यह कहते हुए एक आवाज़ सुनाई दी, ''मार्टिन, मार्टिन! कल गली में बाहर देखना, क्योंकि मैं आऊंगा।'' यह मानते हुए वह आवाज़ प्रभु की है जो उसने सुनी थी, उसने प्रभु के आने की राह देखते हुए अगला दिन बड़ी उत्सकुता से बिताया। परन्तु दिन बीत जाने पर इसमें वही रोज़ होने वाली घटनाएं थीं।

एक बूढ़ा थका-मांदा सिपाही जिसका नाम स्टेपनिक था, ऊपर सड़क के किनारे से बर्फ को साफ कर रहा था कि मार्टिन को उस पर तरस आया और उसने उसे चाय का गर्म प्याला पिलाने के लिए अपनी दुकान में बुला लिया। बाद में एक बच्चे के चीखने की आवाज सुनकर वह बाहर गया और एक भूख से तड़प रही मां को उसके नवजात शिशु के साथ देखा। उन्हें अपनी दुकान में बुलाते हुए मार्टिन ने उस स्त्री को कुछ रोटी और खाने के लिए गोभी का गर्म सूप दिया और बच्चे को उठा लिया। यह देखकर कि उस स्त्री के पास कड़ाके की ठण्ड के लिए अपने आपको

ढांपने के लिए कपड़ा नहीं है उसने उसे अपना पुराना कपड़ा दे दिया।

कुछ देर बार वह स्त्री और बच्चा चले गए, मार्टिन ने गली में बलवे की आवाज़ सुनी, यह देखने के लिए कि क्या हो रहा है, बाहर को गया। उसे एक बूढ़ी स्त्री मिली, जो सेब बेच रही थी। उसने गली के एक लड़के को सेब चुराते हुए पकड़ लिया था और उसे उसके बालों से पकड़ा हुआ था। मार्टिन ने देनों के बीच सुलह करवाने की कोशिश की और चुराए हुए सेब के पैसे भी चुकाने चाहे। कई मिनट उनकी बातचीत के बाद उस स्त्री और लड़के में सुलह हो गई और वे और वह लड़का खुशी से उस बूढ़ी स्त्री की सेबों की टोकरी उठाकर ले गया।

उस शाम मार्टिन जब अपनी बाइबल को पढ़ने के लिए बैठा तो उसे एक आवाज़ यह कहते हुए सुनाई दी, ''मार्टिन, मार्टिन तू मुझे नहीं जानता?'' मार्टिन ने पूछा, ''कौन है?'' ''मैं हूं'' एक जानी-पहचानी आवाज ने कहा। फिर परछाई में से वह बूढ़ा सिपाही स्टेफनिक निकला; और उतनी ही जल्दी से वह अलोप हो गया। एक और आवाज़ ने कहा, ''मैं हूं।'' फिर मार्टिन ने बच्चे के साथ उस जवान महिला को देखा; और वह भी आलोप हो गई। एक तीसरी आवाज़ ने कहा, ''मैं हूं।'' इस बार वह सेब बेचने वाली स्त्री और छोटा लड़का थे, जो अलोप हो गए और जो दिखाई दिए और गायब हो गए।

अन्त में मार्टिन को समझ आया कि उसने उस दिन वास्तव में प्रभु को देखा था। उसने अपनी बाइबल में यीशु के यह शब्द पढ़े ''क्योंकि मैं भूखा था, और तुम ने मुझे खाने को दिया; मैं प्यासा था, और तुम ने मुझे पानी पिलाया, मैं परदेशी था, तुम ने मुझे अपने घर में ठहराया'' (मत्ती 25:35; KJV)। फिर उसने उस पृष्ठ के नीचे पढ़ा, ''तुम ने जो मेरे इन छोटे से छोटे भाइयों में से किसी एक के साथ किया, वह मेरे ही साथ किया'' (मत्ती 25:40; KJV)।

टॉलस्टाय ने कहानी खत्म की ''और मार्टिन को समझ आ गया कि उसका सपना सच हो गया था; और यह कि उद्धारकर्त्ता सचमुच में उस दिन उसके पास आया था और उसने उसका स्वागत किया था।''

टिप्पणियां

[1]वाल्टर बाउर, *ए ग्रीक-इंग्लिश लैक्सिकन ऑफ़ द न्यू टैस्टामैंट एंड अदर अर्ली क्रिश्चियन लिटरेचर,* 3रा संस्क., संशो. व संपा. फ्रैडरिक विलियम डैंकर (शिकागो: यूनिवर्सिटी ऑफ़ शिकागो प्रैस, 2000), 383. [2]मरकुस बार्थ एंड हेलमेट ब्लेंक, *द लैटर टू फिलेमोन: ए न्यू ट्रांसलेशन विद नोट्स एंड कमैंट्री,* द ईर्डमैंस क्रिटिकल कमैंट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 2000), 315. [3]इसे यीशु के झुक कर ज़मीन पर लिखते हुए व्यभिचार करने वाली स्त्री से लोगों का ध्यान हटा कर अपनी ओर लगाने के ढंग में तुलना की सकती है (यूहन्ना 8:1-11)। [4]बार्थ एंड ब्लेंक, 324. [5]फिलिप्पियों 4:2 में भी इसका इस्तेमाल दो बार हुआ है। [6]जोसेफ ए. फिज़मायर, *द लैटर टू फिलेमोन,* द एंकर बाइबल, अंक 34सी (न्यू यॉर्क: डबलडे 2000), 28. [7]जेम्स डी. जी. डन्न, *द एपिस्टल्स टू द कोलोसियंस एंड टू फिलेमोन: ए कमैंट्री ऑन द ग्रीक टैक्स्ट,* द न्यू इंटरनैशनल ग्रीक टैस्टामैंट कमैंट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1996), 304-5. [8]बार्थ एंड ब्लेंक, 30. [9]बाउर, 992. [10]पीटर गोर्डे और थॉमस, सी. ओडेन, सम्पा., *कोलोसियंस, 1-2 थिस्सलोनियंस, 1-2 तिमोथियुस, टाइटस, फिलेमोन,* एंशिएंट कमैंट्री ऑन स्क्रिप्चर (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोय: इंटरवर्सिटी प्रैस, 2000), 316.

[11]डन्न ने दावा किया कि यहां ''यदि'' (*ei ... ti*) का अर्थ ''जो भी'' है (डन्न, 338)। [12]बाउर, 319. [13]वही, 124.